

M.A. S.Y. (Hindi) CBCS Pattern Semester-III  
**MAHNCBCS303 - Vishesh Adhyayan: Munshi Premchand (Optional)**

P. Pages : 3

Time : Three Hours



GUG/W/23/10425

Max. Marks : 80

सुचना :- 1. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांश में से **किसी तीन** गद्यांश की ससंदर्भ व्याख्या किजिए। 30
- 1) "डरना मनुष्य के लिए स्वाभाविक है। जिसमें पुरुषार्थ है, बल है; वह बाधाओं को तुच्छ समझ सकता है, जिसके पास व्यंजनो से भरा हुआ थाल है। वह एक टूकड़ा कुत्ते के सामने फेंक सकता है। जिसके पास एक ही टूकड़ा ही वह तो उसी से चिमटेगा।"
  - 2) मन! मेरी गति कितनी विचित्र है, कितनी रहस्य से भरी हुई कितनी दुर्भेद्य? तू कितनी जल्द रंग बदलता है। इस कला में तू निपुण है। अतिशबाज की चर्खी को भी रंग बदलते कुछ देर लगती है, पर तुझे रंग बदलने में उसका लक्षांश भी नहीं लगता। जहाँ अभी वात्सल्य था, वहाँ फिर सन्देह ने आसन जमा लिया।
  - 3) निरास होने की कोई बात नहीं। बस इतना ही समझ लो कि सुख में आदमी का धरम कुछ और होता है, दुःख में कुछ और। सुख में आदमी दान देता है, मगर दुःख में भीख तक माँगता है। उस समय आदमी का यही धरम हो जाता है। शरीर अच्छा रहता है, तो हम बिना असनान-पूजा किये मूँह में पानी भी नहीं डालते। लेकिन बीमार हो जाते हैं तो बिना नहाये-धोये, कपडे पहने, खाट पर बैठे पथ्य लेते हैं। उस समय का यही धरम है। यहाँ हममें-तुममें कितना भेद है, लेकिन जगन्नाथपुरी में कोई भेद नहीं रहता।
  - 4) 'इस बुद्धि का नाम स्वार्थ-बुद्धि है और जब समाज का संचालन स्वार्थ-बुद्धि के हाथ में आ जाता है, न्याय-बुद्धि गद्दी से उतार दी जाती है तो समझ लो समाज में कोई विप्लव होनेवाला है। गरमी बढ़ जाती है, तो तुरन्त ही आंधी आती है। मानवता हमेशा कुचली नहीं जा सकती। समता जीवन का तत्व है। यही एक दशा है जो समाज को स्थिर रख सकती है।'
  - 5) इस समय उनकी दशा अत्यन्त दयनीय थी। वह आग जो अपने ठिठुरे हुए हाथों को सेकने के लिए जलाई थी, अब उनके घर में लगी जा रही थी। इस करुणा, शोक, पश्चाताप और शंका से उनका चित्त घबरा उठा। उनके गुप्त रोदन की ध्वनि बाहर निकल सकती तो सुनने वाले रो पड़ते। उनके आंसू बाहर निकल सकते तो उनका तार बँध जाता।
  - 6) वह आफत की मारी, व्यंग्य-बाणों से आहत और जीवन के आघातों से व्यथित किसी वृक्ष की छाँह खोजती फिरती थी, और उसे एक भवन मिल गया था जिसके आश्रय में वह अपने को सुरक्षित और सुखी समझ रही थी, पर आज वह भवन अपना सारा सुख-विलास के लिए अलादीन के राजमहल की भाँति गायब हो गया था और भविष्य एक विकराल दानव के समान उसे निगल जाने को खड़ा था।





